जूते की करामात

एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक कथा—जब सुथरे शाह जी ने औरंगजेब का सिर अपने यानि हिन्दुत्व के चरणों में झुकाया।

औरंगजेब कट्टर मुस्लमान बादशाह था जो हिन्दुओं को जबरन मुसलमान बनाकर इस्लामी राज्य कायम करना चाहता था। उसका प्रण था, 'सवा मन जनेऊ जलाने का'। हिन्दूधर्म तथा जनेऊ की रक्षा के लिए 'बाबा सुथरे शाह जी' ने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया।

दिल्ली पहुँचने से पहले बाबा सुथरे शाह जी ने एक चमत्कारी पाँच हाथ का जूता जो कि हीरे, पन्ने आदि जवाहरातों से जड़ा हुआ था बनवाया। वे रात में जामा मस्जिद गए व इस जूती का एक पैर छिपाकर जामा मस्जिद के उस हौज के पास रख आए जहाँ मुसलमान जल लेकर वजू करते थे। सुबह जब मौलवी उठा तो इस हीरे पन्ने जड़ित जूते को देखकर अचम्भित रह गया। उन्होंने सोचा कि यह जूती शायद रसूल अल्लाह हज़रत साहब के चरणों की है। मौलवी जी ने सोचा कि यदि यह जूता औरंगज़ेब को भेंट करेंगे तो बादशाह प्रसन्न होंगे और दरबार की शान बढ़ेगी। यह सोच कर उन्होंने जूती को बादशाह के समक्ष पेश कर दिया। अब इस जूती की बहुत मान्यता होने लगी। लोग दूर-दूर से आकर जूती के दर्शन करने लगे। उसका सिजदा करने लगे। जब इस बात को काफी समय बीत गया व काफी प्रचार हो गया तो सुथरे शाह जी ने इस जूती का दूसरा पैर एक छड़ी के ऊपर बाँध लिया और जामा मस्जिद के आस-पास के इलाकों जैसे चाँदनी चौक, किनारी बाजार, दरीबा आदि में घूमने लगे। वे जहाँ जाते १०-१५ आदमियों को इकट्ठा कर लेते व ऐलान करते- मेरा इस जूती का दूसरा पैर किसी ने चुरा लिया है जो कि बहुत ढूंढने पर भी नहीं मिला। यदि किसी भाई को इसका दूसरा पैर मिल जाए तो वह इसका पता बता दे व मेरे से एक रुपया इनाम का आकर ले जाए।

तभी एक दरबारी वहाँ से जा रहा था जिसने औरंगज़ेब के दरबार में इस जूती को सिजदा किया था। उसने सोचा, हो न हो, अल्लाताला दोनों पैर के जूते मस्जिद में छोड़ गए होंगे। भला कोई एक जूता भी भूल सकता है? उसमें से एक इस काफिर ने चुरा लिया होगा और यह काफिर चोरी का इल्ज़ाम बादशाह पर लगा रहा है। फिर इतना बड़ा जूता इसका हो भी कैसे सकता है? उसने सुथरे शाह जी के साथ चिकनी-चुपड़ी बातें करनी शुरु कर दीं। कुछ और भी दरबारी वहाँ बुलवा लिए। सुथरे शाह जी को पकड़कर औरंगज़ेब के आगे पेश कर दिया गया। सुथरे शाह जी का मन्तव्य पूरा हो गया। वे भी औरंगज़ेब से ही मिलना चाहते थे। दरबार पहुँचते ही सामने रखी चौकी पर जूती को देख हर्षित होकर कहने लगे - हाँ, यही है मेरी जूती। इस पर वहाँ मौजूद सभी दरबारी उत्तेजित हो उठे और उन्हें भला बुरा काफिर कहकर कोसने लगे।

औरंगज़ेब कट्टर मुसलमान होने के साथ-साथ पीरों फकीरों की कदर करता था। इस कारण उसने इनका आदर किया। औरंगज़ेब ने देखा कि यह कोई नूरी पीर लगता है जो उसके सामने इस तरह बेखौफ़ खड़ा होकर बात कर रहा है। अज्ञानी और चापलूस दरबारी कैसे सहन कर सकते थे कि उनके औरंगज़ेब पर एक काफिर इल्ज़ाम लगा दे।

उन्होंने कहा कि अगर यह जूता इसके पैर में नहीं आया तो इसका सिर कलम कर दरबार के बाहर टाँग दिया जाए जिससे कि फिर कभी कोई हमारे बादशाह पर अंगुली उठाने का साहस न कर सके। बाबा सुथरे शाह जी ने झट इस बात को मान लिया व एक शर्त अपनी भी रखी कि यह जूता औरंगज़ेब के हाथों से ही पहनूँगा। दरबारियों के एतराज़ करने के बावजूद औरंगज़ेब इस बात को मान गया क्योंकि वह फकीर के चेहरे के नूर को पढ़ रहा था कि पाँच हाथ का जूता व पाँच हाथ (फुट) का व्यक्ति। संत जी का मकसद यही था औरंगज़ेब को झुकाना।

औरंगज़ेब झुका, उसने बाबा सुथरे शाह जी को अपने हाथों से जूता पहनाया तो वह दो अंगुल छोटा रह गया। सब लोग आश्चर्य चकित रह गए व उनके चेहरे शर्म के मारे लटक गए। बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने इस फ़कीर का मान-सम्मान किया व उससे कुछ माँगने को कहा। सुथरे शाह जी बोले कि ऐ खुदा के बन्दे, तू स्वयं भिखारी होकर हमें कुछ देने की बात करता है। हम तो अलमस्त फकीर हैं, तू हमें क्या देगा? बादशाह ने कहा - 'मैं भला पीरों सन्तों को क्या दे सकता हूँ?

फिर भी इस सल्तनत का मालिक हूँ। आप कुछ तो माँग लो।' इस पर सुथरे शाह जी ने बादशाह को बहुत उपदेश दिए और सबको एक समान समझने की सलाह दी। और कहा - 'ऐ बादशाह, अगर तू मुझे कुछ देना ही चाहता है तो तू मुझे वचन दे कि जो प्रतिज्ञा सवा मन जनेऊ जलाने की तूने की है उसे छोड़ देगा।' औरंगज़ेब ने इसे स्वीकार कर लिया और कहा - 'यह तो आपने समाज के लिए माँगा है। आप अपने लिए भी कुछ माँगिए।' इस पर सुथरे शाह जी ने दोहराया कि हम अलमस्त फकीर हैं हिन्दुओं के फकीर और मुसलमानों के पीर हैं, हमें क्या चाहिए?

बादशाह ने प्रसन्न होकर सुथरे शाह जी की मुठ्ठी में एक रुपया रख दिया। सुथरे शाह जी ने बन्द मुठ्ठी में एक रुपये का टका बना दिया तब औरंगजेब ने ऐलान किया

''पैसा हट्टी जन्ज रूपया, शाहाँ दी बधाई।''

औरंगजेब का यह पट्टा लिखा आज भी मिलता है। सुथरे शाह सम्प्रदाय के संत आज भी जिस हट्टी पर जाते हैं उन्हें यह भिक्षा अवश्य मिलती है।